Question:→ Explain the nature of the Cost Curves. Why Cost Curves are U-shaped?

OR

Explain the relationship between marginal Cost, Average Cost and variable Cost both in the short run and longrun?

OR

Why marginal Cost cuts the average Cost as its lowest point?

Answer:→

स्टैग्ची ने ठीक ही कहा है कि यदि अर्थशास्त्र का आरम्भ उत्पादन से और उसका अन्त उपभोग में है, तो लागत की धारणा उसका दिल है।" Cost is the heart of Economics". अर्थात् जिस तरह मनुष्य के दिल की धड़कन बन्द होते ही मृत हो जाता है, उसी तरह, लागत की धारणा के बिना अर्थशास्त्र भी निष्प्राण हो जाता है। यही कारण है कि प्रारम्भ से ही अर्थशास्त्रियों ने लागत की धारणा के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये है। किन्तु दिल के समान ही लागत की धारणा इतनी नाजुक और जटिल है कि उनके विचार भिन्न-भिन्न है।

किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में जो खर्च या त्याग या परिश्रम होता है, उसे हम लागत कहते हैं। जब इन सभी खर्चों को मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है तो उसे मौद्रिक लागत कहते हैं। "outlay expressed in terms of money is called money cost". आर्थिक जगत एवं गणना में मौद्रिक लागत की धारणा का ही उपयोग होता है। किन्तु Marshall एवं अन्य

अर्थशास्त्रियों ने वास्तविक लागत धारणा का भी प्रयोग किया है। इसके अन्तर्गत किसी वस्तु के उत्पादन में लगे परिश्रम त्याग या थकान के दृष्टिकोण से लागत को मापा गया है। अर्थात् "Real Cost is a measure in terms of labour, exertions or abstinence in the production of commodity"

त्याग
abstinence
5 बार

commodity
15 बार

वास्तविक लागत की धारणा को आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने मनोवैज्ञानिक, अवैज्ञानिक एवं अस्पष्ट धारणा मानते हुए अस्वीकृत कर दिया है। Henderson के अनुसार वास्तविक लागत की धारणा हमें अनिश्चितता के दल-दल में ले जाती है। इसलिए वास्तविक धारणा के बदले Stigler, Mrs. Robinson एवं अन्य कई अर्थशास्त्रियों ने अवसर लागत की धारणा का प्रयोग किया है। किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में लगे साधनों के द्वारा सर्वोत्तम सम्भव वैकल्पिक उत्पादन उसका अवसर लागत कहा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी खेत में अभी हम गेहूँ उत्पादन कर रहे हैं और उसका वैकल्पिक उत्पादन चना है तो चने की उत्पादन की मात्रा गेहूँ के उत्पादन की अवसर लागत हुई। इसलिए अवसर लागत को वैकल्पिक लागत या हस्तांतरित आय भी कहा गया है। कई आधुनिक आर्थिक धारणाओं की व्यवस्था में अवसर लागत, लागत की धारणा उपयोगी होने के बावजूद लागत की धारणा की सम्पूर्ण औसत वैज्ञानिक व्याख्या करने में अवसर लागत की धारणा भी अपूर्ण और असंतोषप्रद मानी जाती है। अतः वास्तविक लागत तथा अवसर लागत जैसी धारणा का सीमित महत्त्व है।

आधुनिक आर्थिक विश्लेषण में लागत की धारणा का विश्लेषण मुख्य रूप से

कुल लागत, स्थिर लागत, परिवर्तनशील लागत, औसत लागत और सीमांत लागत दृष्टिकोण से की जाती है। सामान्यत: कुल लागत को (Total Cost) T.C, स्थिर लागत को (Fixed cost) F.C, परिवर्तनशील लागत को (Variable cost) V.C, औसत लागत को (Average cost) A.C और सीमान्त लागत को (Marginal cost) M.C. से व्यक्त किया जाता है। किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में लगे मौद्रिक खर्च को या कुल लागत को आधुनिक अर्थशास्त्री ने स्थिर लागत एवं परिवर्तनशील लागत के रूप में बाँटकर अध्ययन किया है। Prof. Marshall ने अपनी Magnum Opus पुस्तक Principles of Economics में कुल लागत को Prime cost and Supplementary cost के बीच बाँटकर किया है। स्थिर लागत को Marshall ने Supplementary cost और परिवर्तनशील लागत को Prime cost कहा है।

Supplementary 10 बार

स्थिर लागत (Supplementary cost) :-

स्थिर लागत वह है जो उत्पादन की दर में परिवर्तन होने के बावजूद स्थिर रहता है। Fixed cost is that cost which does not vary with change in the rate of production. इसके अन्दर भूमि, भवन, औजार, स्थाई कर्मचारियों का वेतन आदि को शामिल किया जाता है। कुल स्थिर लागत की रेखा क्षैतिज होती है जैसा कि रेखाचित्र – 1 से स्पष्ट है।

Vary 25 बार

कुल परिवर्तन लागत या T.V.C उत्पादन में वृद्धि होने से बढ़ता है और घटने से घटता है। अत: T.V.C नीचे से ऊपर की ओर उठ रहा है जैसा कि रेखाचित्र -2 से स्पष्ट है।

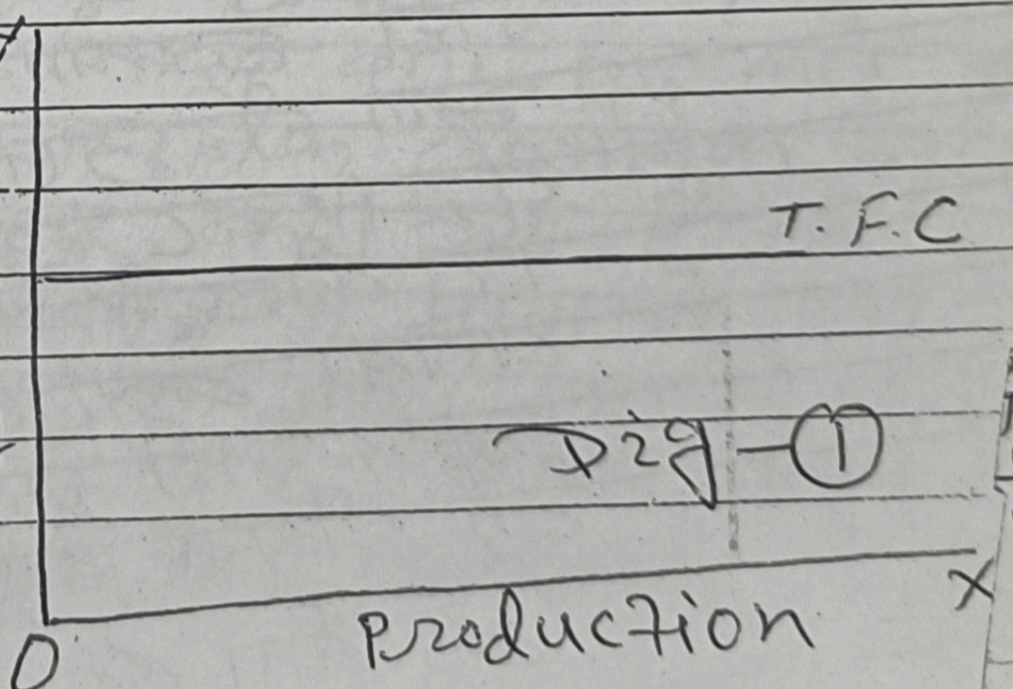

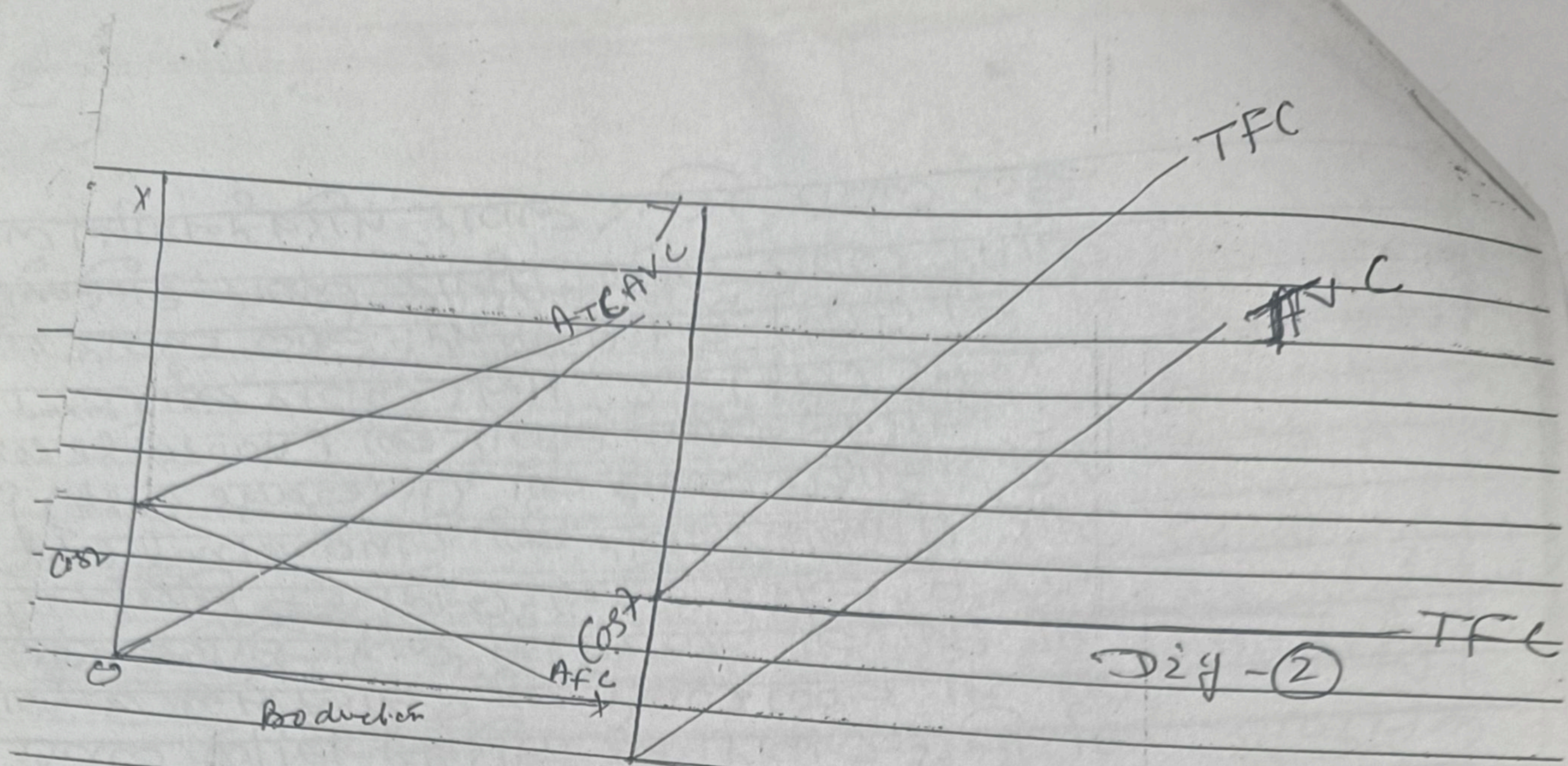

2. यहाँ उल्लेखनीय है कि T.F.C, OY को किसी विन्दु से प्रारम्भ करती है वहीं T.V.C. O विन्दु से होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि कुछ समय के लिए उत्पादन बन्द कर देने के बाबजूद T.F.C शून्य नहीं होता है। जबकि उत्पादन बन्द होने पर T.V.C शून्य होता है, क्योंकि T.V.C के अन्तर्गत कच्चामाल, अस्थायी कर्मचारियों का वेतन सम्मिलित किया जाता है।

जहाँ तक A.F.C का सवाल है इसकी प्राप्ति T.F.C में उत्पादन की कुल मात्रा से भाग देने पर होता है। अर्थात AFC = TFC/Q. इसीलिए A.F.C की रेखा उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ क्रमशः नीचे गिरती है और उसकी प्रवृत्ति आधार रेखा को छूने की होती है, परन्तु वह आधार रेखा से मिलती कभी नहीं है, क्योंकि AFC कभी शून्य नहीं होता, भले ही उसकी मात्रा कितनी भी न्यूनतम हो, A.V.C ऊपर उठता है। उसकी प्रवृत्ति T.C को छूने की होती है। किन्तु वह T.C के बराबर कभी नहीं होती। क्योंकि F.C कभी शून्य नहीं होता। आधार रेखा और A.F.C के बीच P विन्दु के बराबर ही T.C एवं A.V.C के बीच Q की दूरी होती है।